RAWATSAR P.G. COLLEGE

'Sanskriti Ka Badlta Swaroop Aur AI Ki Bhumika' (SBSAIB-2025)

DATE: 25 January 2025

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)

Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

सांस्कृतिक शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की भूमिका तथा सीमाएं

Dr. Mahender Kumar, Assistant Professor, Department of Political Science, Government College, Rawatsar, Hanumangarh, Rajasthan

Abstract

सांस्कृतिक शिक्षा, मानव सभ्यता के इतिहास, परंपराओं, और मूल्यों को समझने और साझा करने का माध्यम है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने इस क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव किए हैं। यह तकनीक सांस्कृतिक विरासत को डिजिटाइज करने, डेटा का विश्लेषण करने, और वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक संवाद को सुगम बनाने में सहायक है। एआई का उपयोग डिजिटल संग्रहालयों, वर्चुअल रियलिटी अनुभवों, भाषाई अनुवाद, और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के लिए किया जा रहा है। हालांकि, एआई आधारित सांस्कृतिक शिक्षा के सामने कई सीमाएं भी हैं। इसमें सांस्कृतिक डेटा की प्रामाणिकता, विविधता की अनदेखी, तकनीकी और आर्थिक असमानता, और सांस्कृतिक संवेदनशीलता से जुड़ी चुनौतियां शामिल हैं। एआई के उपयोग में डेटा पक्षपात और गलत व्याख्या के जोखिम भी हैं। इसके बावजूद, एआई सांस्कृतिक शिक्षा को नई पीढ़ियों के लिए अधिक सुलभ और प्रभावी बना सकता है। उचित दिशा और संवेदनशील दृष्टिकोण के साथ, एआई सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और वैश्विक सांस्कृतिक संवाद में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) को लेकर हालिया अतिशयोक्ति ने इस तकनीक के स्थायी शैक्षिक निहितार्थों पर ठीक से विचार करने की हमारी क्षमता पर प्रभाव डाला है। यह पेपर कई महत्वपूर्ण मुद्दों और चिंताओं को रेखांकित करता है जिन्हें एआई के आसपास भविष्य की शैक्षिक चर्चाओं में अधिक प्रमुखता से शामिल करने की आवश्यकता है। इनमें शामिल हैं: (1) सीमित तरीके जिनसे शैक्षिक प्रक्रियाओं और प्रथाओं को सांख्यिकीय रूप से मॉडलिंग और गणना की जा सकती है; (2) जिन तरीकों से एआई प्रौद्योगिकियां अल्पसंख्यक छात्रों के लिए सामाजिक नुकसान का जोखिम उठाती हैं; (3) शिक्षा को अधिक 'मशीन पठनीय' बनाने के लिए पुनर्संगठित करने से होने वाली हानि; और (4) एआई के डेटा–सघन और उपकरण–गहन रूपों की पारिस्थितिक और पर्यावरणीय लागत। पेपर एआई और शिक्षा के आसपास वर्तमान चर्चाओं को धीमा करने और पुनः व्यवस्थित करने के आह्वान के साथ समाप्त होता है – शक्ति, प्रतिरोध और शिक्षा एआई को अधिक न्यायसंगत और शैक्षिक रूप से लाभकारी लाइनों के साथ फिर से कल्पना करने की संभावना के मुद्दों पर अधिक ध्यान देना।

Keywords : सांस्कृतिक शिक्षा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सांस्कृतिक विरासत, डिजिटलीकरण, सांस्कृतिक डेटा, विश्लेषण, सांस्कृतिक संवाद, वर्चुअल रियलिटी, ऑगमेंटेड रियलिटी, भाषाई अनुवाद, डिजिटल संग्रहालय, सांस्कृतिक अनुभव, सांस्कृतिक विविधता, सांस्कृतिक संरक्षण, शैक्षिक प्लेटफॉर्म, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, डेटा पक्षपात, सांस्कृतिक संवेदनशीलता, तकनीकी असमानता, प्रामाणिकता, सांस्कृतिक परंपराएं।

Article: सांस्कृतिक शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का उपयोग एक उभरता हुआ क्षेत्र है जिसमें अपार संभावनाएं हैं, लेकिन कुछ सीमाएँ भी हैं जिन पर ध्यान देना आवश्यक है। AI, सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने, विश्लेषण करने और प्रस्तुत करने के नए तरीके प्रदान करता है, लेकिन मानवीय संवेदनशीलता और सांस्कृतिक बारीकियों को समझना अभी भी एक चुनौती है।

सांस्कृतिक विरासत का डिजिटलीकरण और संरक्षण – आधुनिक युग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने शिक्षा, विज्ञान, स्वास्थ्य और व्यापार के साथ–साथ सांस्कृतिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विशेष रूप से सांस्कृतिक शिक्षा में, एआई का उपयोग सांस्कृतिक विरासत के डिजिटलीकरण और संरक्षण के लिए किया जा रहा है। यह प्रक्रिया न केवल सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करती है बल्कि इसे व्यापक रूप से सुलभ बनाती है।

सांस्कृतिक शिक्षा में एआई की भूमिका

डिजिटलीकरण और संग्रहण – एआई का उपयोग ऐतिहासिक दस्तावेज़ों, पांडुलिपियों, कलाकृतियों और चित्रों को स्कैन और डिजिटाइज करने के लिए किया जाता है। यह सामग्री डिजिटल संग्रहालयों और ऑनलाइन प्लेटफार्मों पर उपलब्ध कराई जाती है, जिससे लोग विश्व के किसी भी कोने से सांस्कृतिक धरोहर का अध्ययन कर सकते हैं।

भाषा संरक्षण – एआई भाषा अनुवाद, विश्लेषण और पुनर्निर्माण में उपयोगी है। दुर्लभ और लुप्तप्राय भाषाओं को संरक्षित करने के लिए एआई आधारित भाषा मॉडल तैयार किए जा रहे हैं।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

सांस्कृतिक पुनर्निर्माण – एआई का उपयोग पुरानी इमारतों और स्मारकों की संरचना को समझने और पुनर्निर्माण करने में किया जाता है। उदाहरण के लिए, एआई का उपयोग पेरिस के नोट्रे डेम कैथेड्रल के पुनर्निर्माण में किया गया है।

वर्चुअल और ऑगमेंटेड रियलिटी – एआई द्वारा संचालित वर्चुअल रियलिटी और ऑगमेंटेड रियलिटी तकनीकें उपयोगकर्ताओं को ऐतिहासिक स्थलों और सांस्कृतिक अनुभवों का वास्तविक अनुभव प्रदान करती हैं।

शिक्षा और अनुसंधान – एआई सांस्कृतिक शिक्षा को सरल और प्रभावी बनाता है। यह छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए सांस्कृतिक जानकारी को व्यवस्थित और सुलभ बनाता है।

सीमाएं –एआई आधारित डिजिटलीकरण प्रक्रिया में अत्यधिक संसाधन और धन की आवश्यकता होती है। सभी देशों और संगठनों के पास यह सुविधा उपलब्ध नहीं है। एआई तकनीक से सांस्कृतिक डेटा में त्रुटियों या बदलाव की संभावना होती है, जिससे विरासत की प्रामाणिकता प्रभावित हो सकती है। डिजिटलीकरण में सांस्कृतिक संपत्तियों के अधिकारों और गोपनीयता का मुद्दा भी महत्वपूर्ण है। एआई द्वारा डिजिटलीकरण के दौरान छोटी सांस्कृतिक परंपराओं और विविधताओं को अनदेखा किया जा सकता है। सांस्कृतिक धरोहर की स्वायत्तता और उसकी व्याख्या में एआई का हस्तक्षेप नैतिक चिंताओं को जन्म देता है। एआई सांस्कृतिक शिक्षा और विरासत के संरक्षण में एक क्रांतिकारी उपकरण के रूप में उभरा है। हालांकि, इसके उपयोग में आने वाली सीमाओं और चुनौतियों पर ध्यान देकर समाधान खोजना आवश्यक है। डिजिटलीकरण और संरक्षण का यह प्रयास वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों को हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने का एक अनूठा साधन है।

सांस्कृतिक डेटा के विश्लेषण और व्याख्या में एआई की भूमिका

बड़े डेटा सेट का विश्लेषण– एआई सांस्कृतिक डेटा के विशाल भंडार का त्वरित और सटीक विश्लेषण करने में सक्षम है। यह संग्रहालयों, पुस्तकालयों, और सांस्कृतिक संस्थानों के डेटा को संरचित करता है, जिससे उपयोगकर्ताओं के लिए जानकारी अधिक सुलभ हो जाती है।

पैटर्न और रुझान पहचानना – एआई सांस्कृतिक डेटा में छिपे हुए पैटर्न और रुझानों को पहचानने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, ऐतिहासिक कला शैलियों, वास्तुकला या संगीत के विकास की प्रवृत्तियों का अध्ययन करना।

स्वचालित अनुवाद और भाषाई विश्लेषण – एआई आधारित भाषा मॉडल प्राचीन ग्रंथों और दस्तावेजों का अनुवाद और विश्लेषण करते हैं। यह दुर्लभ भाषाओं और लुप्तप्राय साहित्य के संरक्षण में सहायक है।

विजुअल डेटा की व्याख्या – सांस्कृतिक कलाकृतियों और चित्रों का विश्लेषण एआई द्वारा किया जा सकता है, जिसमें रंग, आकार, और ऐतिहासिक संदर्भ जैसे तत्व शामिल होते हैं। यह कला और इतिहास के गहरे अध्ययन को प्रोत्साहित करता है।

संवेदनशील सांस्कृतिक मुद्दों की पहचान – एआई का उपयोग सांस्कृतिक और ऐतिहासिक डेटा में सामाजिक, धार्मिक, और राजनीतिक मुद्दों की पहचान और समझने के लिए किया जाता है।

व्यक्तिगत सीखने का अनुभव – एआई आधारित प्लेटफ़ॉर्म उपयोगकर्ताओं को सांस्कृतिक डेटा और जानकारी के अनुरूप शिक्षण सामग्री प्रदान करते हैं।

सीमाएं –

- सांस्कृतिक डेटा अत्यधिक विविध और जटिल होता है। एआई के लिए इसे सभी संदर्भों में सटीक रूप से व्याख्या करना कठिन हो सकता है।
- सांस्कृतिक डेटा की व्याख्या में त्रुटियां या पक्षपात हो सकता है, जिससे सांस्कृतिक सटीकता प्रभावित हो सकती है।
- सांस्कृतिक डेटा की व्याख्या में सांस्कृतिक मूल्यों और संवेदनशीलताओं का ध्यान न रखने से विवाद उत्पन्न हो सकते हैं।
- सभी सांस्कृतिक परंपराओं के लिए एआई मॉडल विकसित करना चुनौतीपूर्ण है, विशेषकर जब डेटा अपर्याप्त या असंगठित हो।
- एआई आधारित व्याख्या में बड़ी और प्रचलित संस्कृतियों पर अधिक ध्यान केंद्रित हो सकता है, जिससे छोटी संस्कृतियों और परंपराओं को अनदेखा किया जा सकता है।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

सांस्कृतिक डेटा के विश्लेषण और व्याख्या में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने शिक्षा और अनुसंधान में व्यापक परिवर्तन किए हैं। यह सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने और समझने के लिए एक उपयोगी उपकरण है। हालांकि, इसकी सीमाओं और चुनौतियों को पहचानकर इसका उपयोग सावधानीपूर्वक और संवेदनशीलता के साथ किया जाना चाहिए। एआई का सही उपयोग सांस्कृतिक शिक्षा के भविष्य को समृद्ध बना सकता है।

सांस्कृतिक शिक्षा और अनुभव में एआई की भूमिका – सांस्कृतिक शिक्षा का उद्देश्य किसी भी समाज की परंपराओं, मान्यताओं, और इतिहास को समझने और संरक्षित करने में मदद करना है। वर्तमान तकनीकी युग में, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने सांस्कृतिक शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। एआई तकनीकें न केवल सांस्कृतिक ज्ञान के प्रसार को सरल बना रही हैं बल्कि सांस्कृतिक अनुभव को अधिक जीवंत और सुलभ बना रही हैं।

व्यक्तिगत और अनुकूलित शिक्षण – एआई आधारित प्लेटफॉर्म व्यक्तिगत शिक्षा सामग्री प्रदान करते हैं। यह उपयोगकर्ताओं की रुचि, ज्ञान स्तर, और भाषाई पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम तैयार करते हैं, जिससे सांस्कृतिक शिक्षा अधिक प्रभावी हो जाती है।

डिजिटल और वर्चुअल अनुभव– वर्चुअल रियलिटी और ऑगमेंटेड रियलिटी जैसे एआई–संचालित उपकरण उपयोगकर्ताओं को ऐतिहासिक स्थलों, संग्रहालयों, और सांस्कृतिक घटनाओं का वर्चुअल अनुभव प्रदान करते हैं। यह अनुभव न केवल शैक्षणिक होता है, बल्कि रोचक और आकर्षक भी होता है।

सांस्कृतिक सामग्री का अनुवाद और व्याख्या – एआई भाषा अनुवाद टूल जैसे कि Google Translate और अन्य मॉडल, सांस्कृतिक सामग्री को विभिन्न भाषाओं में सुलभ बनाते हैं। यह सांस्कृतिक शिक्षा को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देता है।

डिजिटल संग्रहालय और पुस्तकालय – एआई का उपयोग सांस्कृतिक संग्रहालयों और पुस्तकालयों की सामग्री को डिजिटलीकृत करने में किया जा रहा है। यह ऐतिहासिक दस्तावेजों, कलाकृतियों, और सांस्कृतिक रिकॉर्ड को संरक्षित करता है और इन्हें लोगों के लिए सुलभ बनाता है।

सांस्कृतिक डेटा विश्लेषण – एआई सांस्कृतिक डेटा का गहन विश्लेषण करता है, जिससे उपयोगकर्ता सांस्कृतिक इतिहास, परंपराओं, और मूल्यों को बेहतर समझ सकते हैं।

सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण – एआई पुरानी इमारतों, पांडुलिपियों, और अन्य सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित करने में मदद करता है। तकनीक क्षतिग्रस्त विरासतों के 3क मॉडल तैयार करके उनके पुनर्निर्माण में सहायक होती है।

सांस्कृतिक अनुभव में एआई की भूमिका

आभासी पर्यटन – एआई आधारित वर्चुअल टूर उपयोगकर्ताओं को ऐतिहासिक स्थलों और सांस्कृतिक स्थलों का अनुभव करने का अवसर देता है, भले ही वे भौगोलिक रूप से दूर हों।

सांस्कृतिक प्रदर्शन और कार्यक्रम – एआई सांस्कृतिक नाटकों, संगीत, और नृत्य प्रस्तुतियों को ऑगमेंटेड रियलिटी के माध्यम से प्रस्तुत करने में सक्षम है, जो दर्शकों को अधिक गहराई, जुड़ाव का अनुभव कराता है।

कहानी सुनाने की तकनीक – एआई का उपयोग प्राचीन कथाओं और लोक कथाओं को जीवंत बनाने में किया जा रहा है। इंटरेक्टिव कहानियों और ऑडियो–विजुअल माध्यमों के जरिए उपयोगकर्ता गहरे सांस्कृतिक अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।

शैक्षिक गेम्स और एप्लिकेशन – एआई आधारित सांस्कृतिक गेम्स और एप्स छात्रों को रोचक और इंटरैक्टिव तरीके से सांस्कृतिक ज्ञान प्रदान करते हैं।

सीमाएं – एआई सांस्कृतिक परंपराओं और मान्यताओं की जटिलताओं को पूरी तरह से समझने और प्रदर्शित करने में असमर्थ हो सकता है, जिससे उनकी व्याख्या सीमित हो सकती है। बड़ी और प्रचलित संस्कृतियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए एआई छोटी सांस्कृतिक परंपराओं और अल्पसंख्यक संस्कृतियों को अनदेखा कर सकता है। एआई मॉडल में निर्मित पक्षपात सांस्कृतिक सामग्री की प्रस्तुति में त्रुटियों और असंवेदनशीलता को जन्म दे सकता है। सांस्कृतिक अनुभव में अत्यधिक तकनीकी निर्भरता पारंपरिक और भौतिक अनुभवों को कमजोर कर सकती है। एआई आधारित सांस्कृतिक शिक्षा और अनुभव सभी के लिए सुलभ नहीं हैं, खासकर उन क्षेत्रों में जहां तकनीकी संसाधनों की कमी है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

सांस्कृतिक शिक्षा और अनुभव को समृद्ध और सुलभ बनाया है। हालांकि, इसकी सीमाओं को पहचानकर सावधानीपूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। एआई तकनीकों का सही उपयोग न केवल सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करेगा बल्कि इसे नई पीढ़ियों के लिए आकर्षक और अर्थपूर्ण भी बनाएगा।

सांस्कृतिक आदान–प्रदान और संवाद – सांस्कृतिक आदान–प्रदान और संवाद मानव समाज के विकास के महत्वपूर्ण पहलू हैं। ये प्रक्रिया विभिन्न संस्कृतियों के बीच परस्पर ज्ञान, परंपराओं, और विचारों के आदान–प्रदान को बढ़ावा देती है। आज, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सांस्कृतिक संवाद को सरल और प्रभावी बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। AI तकनीकों ने वैश्विक स्तर पर विभिन्न संस्कृतियों के बीच की खाई को पाटने का प्रयास किया है।

भाषाई बाधाओं का समाधान – AI आधारित भाषा अनुवाद उपकरण, जैसे ळववहसम ज्तंदेसंजम और अन्य, विभिन्न भाषाओं के बीच संवाद को सुगम बनाते हैं। यह विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच की बाधाओं को समाप्त कर, संवाद को बढ़ावा देता है।

संस्कृति–विशिष्ट सामग्री की पहुंच – AI सांस्कृतिक सामग्री को डिजिटल रूप में संरक्षित और वितरित करता है। ऑनलाइन संग्रहालय, डिजिटल पुस्तकालय, और सांस्कृतिक प्रदर्शनियों तक पहुंच किसी भी संस्कृति के प्रति जिज्ञासा रखने वाले व्यक्ति के लिए सुलभ हो गई है।

सोशल मीडिया और ऑनलाइन मंचों पर संवाद – AI एल्गोरिदम सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उपयोगकर्ताओं को सांस्कृतिक विचार–विमर्श के लिए जोड़ते हैं। यह विभिन्न संस्कृतियों के लोगों को बातचीत करने और आपसी समझ बढ़ाने का अवसर देता है।

सांस्कृतिक विविधता का प्रोत्साहन – एआई सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित और प्रदर्शित करने में मदद करता है। यह छोटी संस्कृतियों और अल्पसंख्यक समूहों की अनूठी परंपराओं और रीति–रिवाजों को विश्व स्तर पर साझा करने का माध्यम बनता है।

शैक्षिक प्लेटफॉर्म पर सांस्कृतिक आदान–प्रदान – एआई आधारित शैक्षिक प्लेटफॉर्म विभिन्न संस्कृतियों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। छात्र, शोधकर्ता के लिए वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक है।

कहानी और परंपराओं का संरक्षण – एआई का उपयोग लोक कथाओं, परंपराओं और ऐतिहासिक घटनाओं को डिजिटली संरक्षित करने में किया जाता है। इससे अन्य संस्कृतियों के लोग इन कहानियों के महत्व को समझते हैं।

सीमाएं – एआई मॉडल में निर्मित पक्षपात सांस्कृतिक संवाद में असमानता उत्पन्न कर सकता है। यह बड़ी संस्कृतियों को प्राथमिकता देकर छोटी और हाशिए पर पड़ी संस्कृतियों को अनदेखा कर सकता है। सांस्कृतिक संदर्भों की समझ की कमी के कारण, एआई कुछ परंपराओं या मान्यताओं की गलत व्याख्या कर सकता है, जिससे गलतफहमियां उत्पन्न हो सकती हैं। सभी क्षेत्रों और समुदायों में एआई तकनीकों की पहुंच समान नहीं है। एआई द्वारा सांस्कृतिक सामग्री को प्रस्तुत करते समय उसकी जटिलता और गहराई को अक्सर सरलीकृत किया जा सकता है, जिससे संस्कृति की वास्तविकता का कुछ हिस्सा खो सकता है। सांस्कृतिक डेटा का डिजिटलीकरण गोपनीयता और स्वामित्व से जुड़े मुद्दों को जन्म देता है। यह विशेष रूप से उन समुदायों के लिए चुनौतीपूर्ण है जो अपनी सांस्कृतिक धरोहर पर नियंत्रण बनाए रखना चाहते हैं।

नैतिक और सामाजिक निहितार्थ – आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने सांस्कृतिक शिक्षा को एक नई दिशा प्रदान की है, लेकिन इसके उपयोग के साथ कई नैतिक और सामाजिक निहितार्थ भी जुड़े हैं। सांस्कृतिक परंपराओं और मूल्यों को संरक्षित करने के लिए एआई का प्रभावी उपयोग आवश्यक है, लेकिन यह सुनिश्चित करना भी महत्वपूर्ण है कि इसका उपयोग नैतिकता और सामाजिक संतुलन को बनाए रखते हुए किया जाए। सांस्कृतिक डेटा का डिजिटलीकरण करते समय डेटा गोपनीयता और स्वामित्व का मुद्दा प्रमुख हो जाता है। कई बार सांस्कृतिक समुदायों का डेटा उनकी अनुमति के बिना उपयोग किया जा सकता है, जिससे उनके अधिकारों का हनन हो सकता है। एआई सांस्कृतिक जटिलताओं को सही तरीके से समझने में असफल हो सकता है, जिससे परंपराओं और मान्यताओं का सरलीकरण हो सकता है। यह कई बार संस्कृति के मूल अर्थ को विकृत कर सकता है। एआई मॉडल का निर्माण और प्रशिक्षण उन डेटा पर आधारित होता है, जिनमें सांस्कृतिक पूर्वाग्रह मौजूद हो सकते हैं। यह सांस्कृतिक जानकारी की

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

व्याख्या में असमानता और पक्षपात को जन्म दे सकता है। एआई आधारित तकनीकों का उपयोग करते समय सांस्कृतिक संवेदनशीलता का ध्यान रखना आवश्यक है। किसी समुदाय की परंपराओं और मान्यताओं का अनुचित चित्रण सामाजिक और धार्मिक विवाद पैदा कर सकता है। सांस्कृतिक धरोहर और परंपराओं का उपयोग मौद्रिक लाभ के लिए किया जा सकता है, जिससे सांस्कृतिक समुदायों को कोई लाभ नहीं मिल पाता। यह सांस्कृतिक शोषण का एक बड़ा मुद्दा बन सकता है।

सामाजिक निहितार्थ – एआई तकनीकें अक्सर बड़ी और प्रमुख संस्कृतियों पर केंद्रित होती हैं, जिससे छोटी और हाशिए पर पड़ी संस्कृतियों को नजरअंदाज किया जा सकता है। यह सांस्कृतिक असमानता को बढ़ा सकता है। एआई द्वारा उत्पन्न संवाद और जानकारी बड़ी संस्कृतियों के पक्ष में झुकी हो सकती है, जिससे सांस्कृतिक संवाद में असंतुलन उत्पन्न हो सकता है। एआई तकनीकें यदि सांस्कृतिक संवेदनशीलता को अनदेखा करती हैं, तो यह सामाजिक विभाजन और तनाव को जन्म दे सकती हैं। सांस्कृतिक आदान–प्रदान के दौरान एआई तकनीकों के अत्यधिक उपयोग से कुछ समुदायों की पारंपरिक पहचान कमजोर हो सकती है। विकसित और विकासशील देशों के बीच तकनीकी और आर्थिक असमानता सांस्कृतिक शिक्षा के क्षेत्र में बाधा बन सकती है। एआई आधारित सांस्कृतिक शिक्षा तकनीकों तक सभी की समान पहुंच सुनिश्चित करना चुनौतीपूर्ण है।

समाधान और दिशाएं – एआई तकनीकों के उपयोग के लिए स्पष्ट नैतिक दिशानिर्देश तैयार किए जाने चाहिए, जो सांस्कृतिक संवेदनशीलता और गोपनीयता का पालन सुनिश्चित करें। सांस्कृतिक समुदायों की भागीदारी सांस्कृतिक डेटा के उपयोग में स्थानीय समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए, ताकि उनकी सहमति और अधिकारों का सम्मान हो। एआई तकनीकों को विकसित करते समय अल्पसंख्यक और हाशिए पर पड़ी संस्कृतियों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, ताकि सांस्कृतिक विविधता को बनाए रखा जा सके। सांस्कृतिक शिक्षा में एआई का उपयोग करने से पहले उपयोगकर्ताओं और समुदायों को इसके लाभ, सीमाओं, और नैतिक पहलुओं के बारे में शिक्षित करना आवश्यक है।

निष्कर्ष : सांस्कृतिक शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने सांस्कृतिक ज्ञान के संरक्षण, प्रसार, और संवाद को नया आयाम दिया है। एआई ने सांस्कृतिक विरासत को डिजिटलीकरण, अनुवाद, और वर्चुअल अनुभवों के माध्यम से अधिक सुलभ बनाया है। यह सांस्कृतिक विविधता को प्रोत्साहित करने और विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद को बढ़ावा देने में एक शक्तिशाली उपकरण बनकर उभरा है।

References :

1- https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S2666920X21000357
2- https://www.bcu.ac.uk/education-and-social-work/research/news-and-events/cspace-conference-2021/blog/ai-literacy-the-role-primary-education
3. एडम्स, आर. (2021)। क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता को उपनिवेश से मुक्त किया जा सकता है? अंतःविषय विज्ञान समीक्षाएँ, 46 (1–2), 176–197।
4. बेंडर, ई., गेब्रु, टी., मैकमिलन–मेजर, ए., और मिशेल, एम. (2021)। स्टोकेस्टिक तोते के खतरों पर। निष्पक्षता, जवाबदेही और पारदर्शिता पर 2021 एसीएम सम्मेलन की कार्यवाही में (पीपी. 610–623)।
5. बिरहाने, ए., और वैन डिज्क, जे. (2020, फरवरी)। रोबोट अधिकार? आइए इसके बजाय मानव कल्याण के बारे में बात करें। एआई, नैतिकता और समाज पर एएएआई/एसीएम सम्मेलन की कार्यवाही में (पीपी. 207–213)। कंप्यूटिंग मशीनरी के लिए एसोसिएशन।
6. ब्रौसार्ड, एम. (2021, 22 अप्रैल)। (ट्वीट) ट्विटर